e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET
International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 8, August 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.118

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 8, August 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1108066 |

चूरू जिले में जनसँख्या का व्यवसायिक संगठन

मोहन लाल मंढाड़ –शोधार्थी, भूगोल विभाग, राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरु, (राजस्थान)

डॉ. बिपिन मन्डार – सह–आचार्य, भूगोल विभाग, राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरु, (राजस्थान)

सारांश :

व्यावसायिक संघटन से तात्पर्य किसी व्यक्ति का कृषि, विनिर्माण, व्यापार, सेवाओं अथवा किसी ऐसी गतिविधि में संलग्न होना है जिससे उसे आर्थिक लाभ प्राप्त होता है। भारत की जनसंख्या के व्यवसायिक संघटन का अध्ययन करने से पता चलता है कि यहाँ द्वितीयक और तृतीयक सेक्टरों की अपेक्षा प्राथमिक सेक्टर में लगे श्रमिकों की संख्या अधिक है। देश में पुरुष श्रमिकों की संख्या स्त्री श्रमिकों की संख्या से तीनों सेक्टरों में अधिक है। महिला श्रमिकों की संख्या प्राथमिक सेक्टर में अपेक्षाकृत अधिक है। यद्यपि विगत कुछ वर्षों में महिलाओं की द्वितीयक व तृतीयक सेक्टरों की सहभागिता में सुधार हुआ है। यह भी जानने योग्य है कि पिछले कुछ दशकों में भारत में कृषि सेक्टर के श्रमिकों के अनुपात में गिरावट दर्ज की जा रही है तथा द्वितीयक व तृतीयक सेक्टर में सहभागिता दर बढ़ी है। देश के विभिन्न सेक्टरों में श्रम सहभागिता दर में स्थानिक भिन्नता भी देखने को मिलती है, जैसे हिमाचल प्रदेश व नागालैंड में कृषकों की संख्या अधिक है, वहीं आंध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, झारखंड, पश्चिम बंगाल तथा मध्य प्रदेश में कृषि मजदूरों की संख्या अधिक है। जबकि नगरीकृत क्षेत्रों में श्रमिकों का बहुत बड़ा अनुपात अन्य सेवाओं में संलग्न है। प्रस्तुत शोध पत्र में चुरु जिले में जनसँख्या के व्यवसायिक संगठन के स्तर का मुल्यांकन किया गया है, जिसके अंतर्गत जिले की कार्यशील, सीमांत एवं अकार्यशील जनसँख्या के विवरण को प्रस्तुत किया गया है।

मूल बिंदु : व्यावसायिक संगठन, श्रमजीवी जनसंख्या, विनिर्माण

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 8, August 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1108066 |

परिचय :

किसी क्षेत्र की कुल कार्यशील जनसंख्या (कुल जनसंख्या में कार्य करने वाली जनसंख्या) को व्यवसायिक जनसंख्या कहते हैं। किसी क्षेत्रीय इकाई में रहने वाली जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना जनसंख्या की गुणात्मक क्षमता होती है। यह मानव विकास का मानक होता है। व्यावसायिक संरचना या जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना का अर्थ है किसी व्यक्ति को खेती, निर्माण, व्यापार, सेवाओं और किसी भी अन्य व्यावसायिक गतिविधियों में संलग्न प्रारूप। भारत में कुल श्रमजीवी जनसंख्या का लगभग 58.2 प्रतिशत कृषक व कृषि मजदूर हैं जबकि केवल 4.2 प्रतिशत श्रमिक घरेलू उद्योगों में लगे हैं तथा 37.6 प्रतिशत अन्य श्रमिक हैं जो घरेलू उद्योगों, व्यापार, वाणिज्य, विनिर्माण, मरम्मत व अन्य सेवाओं में कार्यरत हैं। 2011 की जनगणना ने भारत की कामकाजी आबादी को चार प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया है–

- कृषक
- कृषि मजदूर
- घरेलू औद्योगिक श्रमिक
- अन्य श्रमिक

उपरोक्त चार प्रमुख श्रेणियों को तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है–

- प्राथमिक व्यवसाय में किसान और खेतिहर मजदूर शामिल हैं।
- द्वितीयक व्यवसायों में घरेलू औद्योगिक श्रमिक शामिल हैं।
- तृतीयक व्यवसायों में व्यापार, सेवाओं और अन्य व्यावसायिक गतिविधियों में शामिल लोग शामिल हैं।

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)
| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|
||Volume 11, Issue 8, August 2022||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1108066 |

अध्ययन क्षेत्र :

राजस्थान राज्य के उत्तरी पूर्वी भाग में स्थित चूरू जिला राज्य के समस्त 33 जिलों में अपनी विशिष्ट भौगोलिक एवं सांस्कृतिक पहचान रखता है। यह जिला यहाँ शीत ऋतु में अत्यधिक ठण्ड एवं ग्रीष्म ऋतु में अधिकतम तापमान के लिए देश भर में जाना जाता है। अवस्थिति के आधार पर देखें चूरू जिला 27^0 24′ से 29^0 00′ उतरी अक्षांश तथा 73^0 40′ से 75^0 41′ पूर्वी देशान्तर के बीच में स्थित है। वर्तमान में इसके अन्तर्गत राजगढ़, तारानगर ,चूरू, सरदारशहर, रतनगढ़, सुजानगढ़, सिद्धमुख एवं बीदासर आदि आठ तहसीलें है। यह रेल तथा सड़क मार्ग द्वारा दिल्ली, जयपुर, बीकानेर, जोधपुर, श्रीगंगानगर, हिसार इत्यादि से जुड़ा हुआ है। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 11 तथा 52 रतनगढ़, चूरू तथा राजगढ़ तहसीलों से गुजरते हैं। यह जिला उत्तर में हनुमानगढ़, दक्षिण–पूर्व में सीकर तथा झुन्झुनू, उतर–पूर्व में हरियाणा के हिसार जिलें, दक्षिण में नागौर तथा पश्चिम मे बीकानेर जिलें द्वारा सीमांकित है। इस जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 16830 वर्ग किमी. है जो कि राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का 4.91 प्रतिशत है। चूरू जिले की भौगोलिक स्थिति यहाँ के रेगिस्तानी वातावरण तथा न्यून वर्षा के कारण से है। यह लगभग आयताकार रूप में फैला हुआ है। इस जिले की समुद्र तल से औसत ऊँचाई 286.6 मीटर है।

उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध पत्र के निम्न उद्देश्य है–

- चूरू जिले में जनसँख्या के व्यवसायिक संगठन का मुल्यांकन करना।
- चूरू जिले में कार्यशील जनसँख्या में स्त्री–पुरुष अनुपात का आंकलन करना।
- चूरू जिले में कार्य वर्ग के अनुसार जनसँख्या का वर्गीकरण करना।

आंकड़ो के स्त्रोत :

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक आंकड़ों के आधार पर तैयार किया गया है। द्वितीयक आंकड़ो का संग्रहण विभिन्न प्रकार की सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओ द्वारा प्रकाशित रेपोट्र्स, पुस्तकों आदि के मध्यम से किया गया है। इस हेतु जिले के विभिन्न कार्यालयो यथा, सांख्यिकीय कार्यालय, जिला चूरु, विभिन्न तहसील कार्यालयों आदि के माध्यम से भी आंकड़ो का संकलन कीया गया है। आवश्यकता अनुरूप विभिन्न प्रकार के ऑनलाइन स्रोतों से भी जिले से संबन्धित सूचनाओ का संकलन कर शोध पत्र लेखन मे सहायता ली गयी है।

साहित्य पुनरावलोकन :

1. B.B. L. Sharma, Akshay Shukla (2011) ने ''कृषि संसाधनो पर जनसंख्या दबाव के कारण पर्यावरण की समस्या'' में उत्तर प्रदेष के रामपुर जिले के विशेष अध्ययन द्वारा क्षेत्र मे निरन्तर बढती हुई जनसंख्या के कृषि भूमि उत्पादनो पर पड़ने वाले दबाव का अध्ययन किया है।
2. घोष बी. एन. (2012) ने अपनी पुस्तक फंडामेंटल ऑफ़ पापुलेशन ज्योग्राफी में शहरों में प्रदूषण बढ़ने का कारण जनसंख्या को मना है इसके अध्ययन के अनुसार क्षेत्र में जनसँख्या बढ़ने पर खाद्यान की समस्या आती है एवं पर्यावरण प्रदूषण भी बढ़ता है।
3. Chinnasamy et al (2015) ने सूदूर संवेदन तकनीक से राजस्थान में भूमिगत जल के स्तर में बदलाव व पूर्नः भरण का अध्ययन प्रस्तुत किया है।
4. Tiwari et al (2015) ने राजस्थान के जल सुरक्षा के संदर्भ में जल संसाधन प्रबंधन का अध्ययन किया हैं तथा बताया है कि वर्षा जल संचयन व अन्य जल संरक्षण की विधियों पर जोर देने की आवश्यकता है।

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 8, August 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1108066 |

चूरू जिले में जनसँख्या की व्यवसायिक संरचना :

चूरु जिले मे व्यवसाय अनुसार जनसंख्या के वितरण को तालिका संख्या 01 मे दर्शाया गया है। चूरु जिले मे जनसंख्या के व्यवसायिक संगठन को निम्न बिन्दुओं के द्वारा विश्लेषित किया गया है–

कार्यशील जनसंख्या :

कार्यशील जनसंख्या वर्ग के अंतर्गत जनसंख्या के उस समूह को रखा जाता है जो वर्ष पर्यंत किसी कार्य मे संलग्न रहता है। चूरु जिले मे कार्यशील जनसंख्या के आंकड़ो को देखें तों तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है की जिले मे वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जिले मे कार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत 44.27 था, जिसमे पुरुषों का प्रतिशत 51.49 एवं कार्यशील महिलाओं का प्रतिशत 36.58 था। इसी प्रकार ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के संदर्भ मे देखें तो जिले के ग्रामीण क्षेत्रो मे यह प्रतिशत 50.09 था जबकि नगरीय क्षेत्रों मे यह प्रतिशत 29.48 था।

तालिका संख्या 01 :

जिले की कार्यशील सीमान्त एवं अकार्यशील जनसंख्या का वितरण, 2011 (प्रतिशत)

क्षेत्र	कार्यशील			सीमान्त			अकार्यशील		
	पुरुष	स्त्री	योग	पुरुष	स्त्री	योग	पुरुष	स्त्री	योग
ग्रामीण	52.46	47.56	50.09	10.73	24.00	17.15	47.54	52.44	49.91
नगरीय	49.02	8.78	29.48	4.79	3.32	4.08	50.98	91.22	70.52
चूरु जिला	**51.49**	**36.58**	**44.27**	**9.05**	**18.14**	**13.46**	**48.51**	**63.42**	**55.73**

स्रोत : जनगणना प्रतिवेदन 2020, राजस्थान

सीमांत जनसंख्या :'

जनसंख्या का वह समूह जिसने वर्ष पर्यंत तो नहीं परंतु वर्ष के कुछ महीनों मे आंशिक रूप से कार्य किया हो उन्हे सीमांत जनसंख्या वर्ग के अंतर्गत रखा जाता है। चूरु जिले मे वर्ष 2011 मे सीमांत जनसंख्या का कुल प्रतिशत 13.46 था। इस वर्ष जिले मे परूषों एवं स्त्रियॉ का प्रतिशत क्रमशः 9.05 एवं 18.14 था। स्पष्ट है की जिले मे सीमांत जनसंख्या मे स्त्रियॉ का प्रतिशत ज्यादा

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)
| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|
||Volume 11, Issue 8, August 2022||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1108066 |

पाया गया है। इसी प्रकार जिले के ग्रामीण क्षेत्रों मे सीमांत श्रेणी के पुरुषों का प्रतिशत 10.73 था जबकि नगरीय क्षेत्रों मे इनका प्रतिशत केवल 4.79 था।

अकार्यशील जनसंख्या :

वो जनसंख्या वर्ग जो वर्ष भर कोई भी कार्य नहीं करते है उन्हे अकार्यशील जनसंख्या वर्ग के अंतर्गत रखा जाता है। मूलतः इस श्रेणी मे वृद्धों, ग्रहणियो, बच्चो, निशक्तजनों इत्यादि को शामिल किया जाता है। चूरु जिले मे अकार्यशील जनसंख्या के आंकड़ो को देखे तो तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है की जिले मे वर्ष 2011 के आंकड़ो के अनुसार अकार्यशील जनसंख्या का कुल प्रतिशत 55.73 था। इस वर्ष जिले मे अकार्यशील जनसंख्या के अंतर्गत पुरुषों का प्रतिशत 48.51 था जबकि स्त्रियॉ का प्रतिशत 63.42 था। जिले के ग्रामीण क्षेत्रों मे अकार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत 49.91 पाया गया है जबकि नगरीय क्षेत्रों मे यह प्रतिशत 70.52 पाया गया है।

निष्कर्ष :

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर स्पष्ट होता है की चूरु जिले मे जनसंख्या के व्यवसायिक स्वरूप मे व्यापक विषमता देखने को मिलती है। जिले मे सर्वाधिक प्रतिशत अकार्यशील जनसंख्या का पाया गया है, जो की 55.73 प्रतिशत है। इसी प्रकार जिले मे दूसरा सर्वाधिक प्रतिशत कार्यशील जनसंख्या का पाया गया है। जिले मे सीमांत जनसंख्या वर्ग के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों मे स्त्रियों का प्रतिशत अधिक पाया गया है जबकि नगरीय क्षेत्रों मे सीमांत जनसंख्या के अंतर्गत पुरुषों का प्रतिशत अधिक पाया गया है।

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 8, August 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1108066 |

References

1. अग्रवाल, गोविन्द, चूरू मण्डल का शोधपूर्ण इतिहास, लोक संस्कृति शोध संस्थान, नगर श्री, चूरू, 1974.
2. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, चूरू, गवर्नमेन्ट सेन्ट्रल प्रेस, जयपुर, 1970.
3. जिला जनगणना सार, जनगणना विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2011.
4. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, जिला–चूरू, आर्थिकी एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान सरकार, जयपुर, 2020.
5. ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग की योजनाएँ तथा उपलब्धियाँ, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग, राजस्थान सरकार तथा इंदिरा गाँधी पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास संस्थान, जयपुर, 2005.
6. ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्धित ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग तथा अन्य विभागों की योजनाएँ एवं गतिविधियाँ, इंदिरा गाँधी पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास संस्थान, जयपुर, 2005.

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 8.118

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details